



प्रकाशित: 23 अक्टूबर 2019 को दैनिक जागरण में प्रकाशित-

इतिहास को दोबारा लिखने की जरूरत, कई महापुरुषों को नहीं मिला उचित स्थान

पीयूष द्विवेदी

गत 17 सितंबर को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में स्कंदगुप्त : गुप्तवंशक वीरविक्रमादित्य का ऐतिहासिक पुनस्मरण एवं भारत राष्ट्र का : विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा 'राजनीतिक भविष्य कि इतिहास में गड़बड़ियों के लिए अंग्रेजों एवं वामपंथियों को दोष देने से कुछ नहीं होगा, बल्कि वर्तमान में भारतीय दृष्टि से इतिहास का पुनर्लेखन किए जाने की जरूरत है। उन्होंने मौर्य वंश, गुप्त वंश से लेकर शिवाजी तक का उदाहरण देते हुए कहा कि इन महापुरुषों के विषय में आज ढूंढने पर कोई संदर्भ ग्रंथ नहीं मिलता तो यह हमारी कमी है।

अमित शाह के इस वक्तव्य में भारतीय इतिहास का एक व्यापक परिप्रेक्ष्य मौजूद है। दरअसल आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंजवाहर लाल नेहरू पर पश्चिम का गहरा प्रभाव था। समाजवाद को वे देश की समस्याओं का सबसे बेहतर समाधान मानते थे।

दृष्टि पर भी रहा। पश्चिमी विद्वानों द्वारा स्थापित -पश्चिम का यह प्रभाव उनकी इतिहास आर्यआक्रमण सिद्धांत, जो इतिहास का एक विवादास्पद विषय रहा है, में उनकी आस्था थी। पुस्तक में संकलित एक पत्र में उन्होंने लिखा है 'पिता के पत्र पुत्री के नाम', '..हिंदुस्तान के रहने वाले द्रविड़ कहलाते थे। ये वही लोग हैं, जिनकी संतान आजकल दक्षिण हिंदुस्तान में मद्रास के आसपास रहती है। उन पर आर्यों ने उत्तर से आकर हमला किया, उस जमाने में मध्य एशिया में बेशुमार आर्य रहते होंगे। आर्य एक मजबूत लड़ने वाली जाति थी, उसने द्रविड़ों को भगा दिया।'

प्रथम प्रधानमंत्री की इस पश्चिम-प्रभावित दृष्टि का प्रभाव देश के इतिहास लेखन पर भी पड़ा और इतिहासकारों ने पूर्वाग्रहयुक्त अभारतीय दृष्टि के साथ भारतीय इतिहास का लेखन किया, जिसमें विदेशी आक्रांताओं के पराक्रम एवं शासन का वर्णन तो खूब हुआ, परंतु देश के अनेक महापुरुष उचित स्थान नहीं पा सके। यह इतिहास कुछ यूं रहा, जिसमें साम्राज्य-विस्तार की लालसा में खून की नदियां बहाने वाले मुगल शासक अकबर को महान बना दिया गया, लेकिन उसके खिलाफ जंगल-जंगल भटककर संघर्ष करने वाले महाराणा प्रताप की कोई विशेष चर्चा नहीं की गई। रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह, मंगल पाण्डेय, तात्या टोपे जैसे अनेक नाम हैं, जिन्हें इतिहास में पर्याप्त स्थान नहीं मिला। कुल मिलाकर अमित शाह

ने अपने वक्तव्य में इतिहास में गड़बड़ी की समस्या को तो रेखांकित किया ही, लेकिन उससे कहीं अधिक जोर भारतीय दृष्टि से इतिहास का पुनर्लेखन कर इस समस्या को दूर करने पर दिया।

शाह इतिहास के जिस भारतीय दृष्टि से युक्त पुनर्लेखन की बात कर रहे, संस्थागत रूप से वर्तमान में उसके लिए कोई संभावनापूर्ण स्थिति नहीं दिखती। भारतीय अनुसंधान इतिहास परिषद की वेबसाइट खंगालने पर किसी भी नए ऐतिहासिक शोध या स्थापना से संबंधित किसी किताब की जानकारी नहीं मिलती। ऐसी किसी किताब की कोई चर्चा भी कहीं नहीं सुनाई देती। इससे इतर स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य कर रहे नए लेखकों को देखें तो आज हिंदी का ज्यादातर नया लेखन कथा-कविता पर केंद्रित हो रहा है, शोध-इतिहास की तरफ नए लेखक जाना ही नहीं चाहते। जो भी नया लेखक आ रहा, वह कहानी-संग्रह, कविता-संग्रह या उपन्यास के साथ आ रहा है। कथा-कविता की पुस्तकों की भीड़ में ऐसी पुस्तकें बहुत कम दिखती हैं जो इतिहास में उपेक्षित रहे किसी विषय पर प्रकाश डालती हों या किसी ऐतिहासिक स्थापना को निरस्त कर नई स्थापना करती हों।

हालांकि ऐसा नहीं है कि रचनात्मक साहित्य लिखते हुए ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं लिखे जा सकते। आचार्य शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी से लेकर दिनकर तक हिंदी साहित्य में कई ऐसे उदाहरण हमारे सामने हैं, जिन्होंने रचनात्मक साहित्य के साथ इतिहास पर भी जमकर कलम चलाई और उनका लिखा आज हमारी थाती है, परंतु यह कर्म असीम धैर्य, श्रम और समर्पण के साथ-साथ साहस भी मांगता है, जिसका आज के नए लेखकों की पीढ़ी में खासा अभाव है। विश्वविद्यालयों के इतिहास विभाग में भी शोध के स्तर पर कुछ बेहतर होता नजर नहीं आता। कुल मिलाकर इस बात से अधिकांश लोग सहमत मिलेंगे कि भारतीय इतिहास में सबकुछ ठीक नहीं है, लेकिन कोई इसे ठीक करने की जहमत नहीं उठाना चाहता।

एक प्रश्न यह भी उठता है कि नए सिरे से इतिहास-लेखन की दिशा क्या होनी चाहिए और उसमें किन बिंदुओं पर काम किया जाना चाहिए। इसके लिए कुछ-कुछ दिशा तो गृह मंत्री ने अपने भाषण में ही दे दी कि इतिहास के उपेक्षित महापुरुषों और साम्राज्यों पर संदर्भ ग्रंथ तैयार किए जाएं। इसके अलावा अबतक जो इतिहास लेखन हुआ है, उसका अधिकांश हिस्सा ईसा के बाद का है, जबकि भारतीय सभ्यता की जड़ें बहुत गहरी, बहुत पुरातन हैं। दिक्कत यही है कि हमने भारतीयता युक्त इतिहास दृष्टि से कभी उनको देखने का प्रयत्न ही नहीं किया।

यह अभारतीय दृष्टि ही है, जिसने रामायण और महाभारत जैसे हमारी सभ्यता-संस्कृति के महान ऐतिहासिक ग्रंथों को मिथक बता दिया है, जबकि भारत सहित दुनिया भर में प्राप्त

अनेक प्रमाण यह इंगित कर चुके हैं कि यह ग्रंथ इतिहास हैं। राखीगढ़ी में प्राप्त बसावट के अवशेष हों या सिनौली में प्राप्त रथ, मुकुट हों या इंडोनेशिया के समुद्र में मौजूद भगवान विष्णु का पांच हजार साल पुराना मंदिर हो अथवा काफी पहले जर्मनी में प्राप्त हुई नरसिंह भगवान की लगभग चार हजार साल पुरानी प्रतिमा हो, इस तरह के तमाम साक्ष्य हमारी विस्तृत, पुरातन और समृद्ध सभ्यता की कथा कहते हैं। ऐसे ही रामायण और महाभारत से जुड़े सभी साक्ष्यों को संकलित कर इतिहास ग्रंथों के लेखन की दिशा में कार्य किया जा सकता है। निःसंदेह यह कार्य आसान नहीं है और इसके लिए जैसा कि अमित शाह ने कहा हमें हमारी 'मेहनत करने की दिशा को केंद्रित' करने की जरूरत है।

गृह मंत्री के इस वक्तव्य के पश्चात यह उम्मीद कर सकते हैं कि देश के बौद्धिक वर्ग में इसका असर होगा और वे इतिहास की बात आने पर अंग्रेजों और वामपंथियों को कोसने के बजाय नया इतिहास लिखने में ऊर्जा खर्च करना शुरू करेंगे। गृह मंत्री अमित शाह इतिहास के जिस भारतीय दृष्टि से युक्त पुनर्लेखन की बात कर रहे, संस्थागत रूप से वर्तमान में उसके लिए कोई संभावनापूर्ण स्थिति नहीं दिखती

(लेखक कला-संस्कृति मामलों के जानकार हैं)

<https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-need-to-rewrite-the-indian-history-jagran-special-19693241.html>